नरेन्द्र कोहली के कृष्णकथात्मक उपन्यासों में जीवन मूल्य

शोध निर्देशिका
डॉ0 सुमन राठी
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
अस्थल बोहर, रोहतक

शोध छात्रा
संजू
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
अस्थल बोहर, रोहतक

सारांश

साहित्य समाज का दर्पण होता है और साहित्यकार समाज से अछूता रहकर साहित्य सृजन नहीं कर सकता है। साहित्य एक ऐसा अस्त्र है, जो बिना प्रहार के ही मानव को निढाल करने की क्षमता रखता है। नरेन्द्र कोहली एक संवेदनशील साहित्यकार है। कोहली जी के कृष्णकथात्मक उपन्यासों का अध्ययन करने पर यही समझ में आया कि समय कोई हो, काल कोई हो, परिस्थिति अथवा परिवेश कैसा भी हो व्यक्ति या समाज जीवन मूल्यों के बिना जीवन निरर्थक है। मानव जीवन की उपयोगिता और अनिवार्यता सदैव ही मूल्यों से विकसित होती रही है। मानव की प्रवृति सदैव ही जिज्ञासु रही है और वह समय के अनुसार परिवर्तित होती रही है। समय के अनुसार मूल्य भी परिवर्तित होते रहे हैं और कोहली जी अपने कृष्णकथात्मक उपन्यासों में मानव को पुनः नैतिक मूल्यों की ओर अग्रसर करने का प्रयास करते हैं। मानव जीवन सभ्यता और संस्कृति के साथ ही जन कल्याण तथा विकास की ओर अग्रसर हो सकता है। मानव जीवन में मूल्य महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा समाज को नई दिशा प्रदान करते हैं। आज समाज में जीवन मूल्य लुप्त होते जा रहे हैं और यही कारण है कि समाज में स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वेष, दुरवस्था, भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ पाँव फैला रही हैं। कोहली जी अपने कृष्णकथात्मक उपन्यासों के माध्यम से समाज की समस्या को उदघाटित करते है और भीष्म, कृष्ण, वेदव्यास तथा पाण्डवों के माध्यम से पुनः धर्म तथा मूल्यों की स्थापना का प्रयास करते हैं।

प्रस्तावना

मनुष्य समाज में रहता है और अपने जीवन में समाज की मान्यताओं तथा धारणाओं को शामिल करता है। समाज की मान्यताओं व धारणाओं से ही मूल्यों का निर्धारण होता है। मनुष्य का जीवन मूल्यों के बिना पशु के समान है। समाज में मूल्य समय के साथ परिवर्तित होते रहते हैं और समाज की आवश्यकता के अनुरूप ही मूल्यों का निर्धारण होता है। समाज को विकास तथा उन्नति की ओर अग्रसर करने के लिए मूल्यों की आवश्यकता होती है। समाज में सभ्यता और संस्कृति को बनाए रखने के लिए मूल्य महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किसी वस्तु या विचार के प्रति मनुष्य की

धारणा ही मूल्यों को जन्म देती है। मूल्यों को समाज में श्रेष्ठता का संवाहक माना जाता है। प्रत्येक युग में समाज परिवर्तित होता रहता है और उसी के साथ मूल्य भी परिवर्तित होते रहते हैं। प्रत्येक युग में अपने मूल्य होते हैं और मूल्य सदैव ही बनते और बदलते रहे हैं। समाज की मान्यताएँ, रीति–रिवाज, प्रथाएँ ही वास्तव में मूल्यों का स्वरूप होती है। मानव जीवन की मूल्यों के बिना कल्पना भी नहीं की जा सकती। मानव जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए जीवन मूल्यों की अवधारणा अस्तित्व में आई। जीवन मूल्य मानव जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। मूल्य मानव जीवन का ऐसा स्वाभाविक गुण कहा जा सकता है, जिससे मानव जीवन सुचारू ढंग से परिचालित होता है। मानव जीवन में सभ्यता और संस्कृति का संचार मानव मूल्यों के बिना असम्भव है। जीवन मूल्यों में मानव की विचारधारा तथा मानव कल्याण समाहित होता है। मानव भौतिक के साथ–साथ भावनात्मक विचारधारा से अधिक प्रभावित होता है। मानव जीवन में संस्कृति का सीधा सम्बन्ध जीवन मूल्यों से होता हैं। समाज में समय के साथ संस्कृति परिवर्तित हो रही है और उसी अनुरूप जीवन मूल्य भी परिवर्तित हो रहे हैं।

जीवन

बृहत हिन्दी शब्द कोश के अनुसार ''जीवन का अर्थ (स0 जीव + ल्यूट्) पु0 मनुष्यों, पशुओं और वनस्पतियों में विद्यमान वह शक्ति विशेष जो जड़ पदार्थों में और मृत शरीरों में नहीं होती और जिसके कारण मनुष्य आदि अपना विकास, भरण, पोषण, वंश वृद्धि इत्यादि और संवेदनों का अनुभव कर पाते हैं।''1 इसे जीवन शक्ति या प्राण शक्ति के नाम से जाना जाता है। इससे ज्ञात होता है कि जीवन सजीव वस्तुओं को ईश्वर द्वारा प्रदान किया गया ऐसा उपहार है, जिसे पाकर मानव विचार, चिन्तन, संवेदना आदि को अनुभव करता है। मानव समाज में अपने विकास, कल्याण तथा भरण–पोषण करते हुए जीवनयापन करता है।

परिभाषा

लोकभारती राजभाषा शब्दकोश के अनुसार जीवन शब्द से तात्पर्य जीने का अधिकार से लिया जाता है। इससे ज्ञात होता है कि जीवन मानव को जीने के अधिकार स्वरूप मिला है।

अंग्रेजी – हिन्दी प्रशासनिक कोश के अनुसार–जीवन शब्द अंग्रेजी के life शब्द से बना है, जिसका अर्थ है – जीवन, जीव, स्फूर्ति, प्राण आदि'' जीवन के अर्थ को जानने के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि जीवन मानव शरीर में स्फूर्ति और प्राणों का संचार है।

मूल्य

'मूल्य' शब्द अर्थशास्त्र में मूल्य के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता रहा है। धीरे–धीरे इसका प्रचलन भिन्न अर्थ में होने लगा है। आज मूल्य का प्रयोग व्यक्तिवादी, समाजवादी, भोवादी, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, नैतिक आदि दृष्टिकोणों में हो रहा है।

मूल्य शब्द अंग्रेजी के value शब्द का अनुवाद है। अंग्रेजी हिन्दी प्रशासनिक कोश के अनुसार value शब्द का अर्थ मूल्य–भाव 2. उपयोगिता, महत्त्व आदि होता है।''

इससे ज्ञात होता है कि मूल्य में अनेक दृष्टिकोण समाहित है जो समाज के लिए उपयोगी होने के साथ–साथ कल्याणकारी भी हैं। जीवन मूल्य धर्म और संस्कृति के अनुरूप मानव को व्यवहार करने के लिए अभिप्रेरित करते हैं। वास्तव में जीवन मूल्य ही मनुष्य को मनुष्य बनाने का कार्य करते हैं।

जीवन मूल्य

मानव जीवन मूल्यों को आधार बनाकर अच्छा–बुरा या सही गलत की पहचान करता है। मानव जीवन में प्रथम शिक्षक उसकी माँ होती है और फिर परिवार। परिवार, समाज तथा विद्यालय से ही मानव जीवन में सामाजिक गुणों तथा मूल्यों का विकास होता है। भारत में प्राचीन काल से ही मूल्य आधारित शिक्षा प्रचलित है। आज पाश्चात्य सभ्यता तथा संस्कृति के प्रभाव स्वरूप मूल्य आधारित शिक्षा का स्तर घटता जा रहा है, जबकि मानव जीवन को सुचारू ढंग से परिचालित करने के लिए जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षा आवश्यक है। आज समाज में मूल्य विघटित हो रहे हैं और कोहली जी के कृष्णकथात्मक उपन्यासों में इसका स्पष्ट चित्र दर्शाया गया है।

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है और साहित्यकार कभी भी मात्र मनोरंजन के उद्देश्य से साहित्य का सृजन नहीं करता है। वह अपने साहित्य में समाज की समस्या तथा कल्याण को स्थान देते हुए यथार्थ परिस्थितियों का चित्रण करता है। वह मानव जीवन को देखकर अनुभव करते हुए उसे अपने साहित्य में अभिव्यक्त करता है।

नरेन्द्र कोहली के कृष्णकथात्मक उपन्यासों में विघटित होते जीवन मूल्यों का स्पष्ट चित्र दर्शाया गया है। कोहली जो संवेदनशील साहित्यकार हैं। उनके कृष्णकथात्मक उपन्यासों में दलित– पीड़ित मानवता, असन्तोष, दुरवस्था, नकारात्मकता तथा कुण्ठा से अत्याधिक प्रभावित है। ऐसी स्थिति में कोहली जी ने मानव जीवन में शाश्वत मूल्यों को समझकर उन्हें पुनः स्थापित करने का प्रयास किया है। कोहली जी अपने उपन्यासों के माध्यम से लुप्त हो रहे जीवन मूल्यों को व्यवस्थित करते हुए स्थापित करने का प्रयास करते हैं।

कोहली जी ने कृष्णकथात्मक उपन्यासों में अतीत को वर्तमान के साथ जोड़कर समाज को नैतिक मूल्यों की ओर अग्रसर किया है। इनका साहित्य समाज कल्याण और मूल्य स्थापना का संदेश लिए हुए है तथा एक अमूल्य धरोहर के रूप में समाज के मध्य स्थापित है। इनके उपन्यासों में सत्यं, शिवम् और सुन्दरम् का यथार्थ स्वरूप दर्शाया गया है। कोहली जी के साहित्य में जीवन मूल्यों तथा धर्म स्थापना करने का प्रयास किया गया है।

दुर्खीम महोदय मूल्यों को सामाजिक आदर्श के रूप में स्वीकारते हुए कहते हैं कि ''मूल्यों की विवेचना सामाजिक तथ्य के रूप में ही करनी चाहिए।'' साहित्य प्राचीन काल से ही अभिव्यक्ति का अच्छा स्त्रोत रहा है। साहित्यकार साहित्य सृजन करते समय जीवन मूल्यों और उसके विकास और निर्द्वन्द्व भाव से विचार करता है। साहित्यकार समाज की परिस्थितियों और परिवेश से अछूता न रहकर पूर्ण प्रयास करता है कि अपने साहित्य के माध्यम से नवीन मूल्यों की अभिव्यक्ति को वर्णित कर सके।

कोहली जी ऐसे साहित्यकार है जिनके साहित्य में जीवन मूल्यों का स्पष्ट स्वरूप दर्शाया गया है। इनके कृष्णकथात्मक उपन्यासों में वैयक्तिक और सामाजिक मूल्यों का चित्र वर्ण व्यवस्था से उभर कर सामने आता है। मानव स्वयं जीवन मूल्यों के साथ अपने विकास की ओर अग्रसर होते हुए अपने मन, आत्मा के ज्ञान के साथ सभ्यता और संस्कृति से परिचित हो रहा है। सभ्यता और संस्कृति पर ही जीवन मूल्य निर्भर करते हैं। जीवन मूल्यों का आधार मानव और उसका आचरण ही होता है।

महासमर एक ऐसा उपन्यास है जिसमें व्यक्ति व्यवहार के माध्यम से मूल्यों की स्थापना ही नहीं करते, उनके कार्य और कारण को भी प्रमाण के साथ उद्घाटित करते हैं। व्यक्ति, परिवार और समाज तीनों ही किसी न किसी धरातल पर परस्पर एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। महासमर में भीष्म, पाण्डव तथा कृष्ण के माध्यम से वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों को उद्घाटित किया गया है। भीष्म अपने पिता के लिए स्वयं के जीवन में आने वाले समस्त सुखों को त्यागकर सदैव धर्म के मार्ग पर प्रशस्त होता है।

भीष्म वैयक्तिक तथा पारिवारिक मूल्यों को स्थापित करने के लिए पाण्डवों की सत्य निष्ठा और धर्म पूर्ण आचरण को जानते हुए भी दुर्योधन का पक्ष लेते हैं। उनका मानना है कि पारिवारिक प्रेम और सौहार्द को बनाए रखने के लिए यदि पाण्डवों को शोषण सहन करना पड़े तो वही सही है। धर्म तथा कर्म के बन्धन में बँधकर भीष्म अंत तक त्याग और द्वंद्व में फंसे रहते हैं। कोहली जी समाज की आज की स्थिति का वर्णन करते हुए अपने उपन्यासों में विघटित हो रहे जीवन मूल्यों का वर्णन करते हैं। दुर्योधन, कर्ण, शकुनि आदि के माध्यम से कोहली जी आज की स्थिति का

स्पष्ट तथा यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हैं। एक ओर भीष्म, पाण्डव तथा कृष्ण हैं जो सब कुछ त्याग कर भी शान्तिपूर्ण तथा सुखमय जीवन व्यतीत करते हैं और दूसरी ओर धृतराष्ट्र तथा उसके पुत्र हैं जो अपने स्वार्थ में अन्धे होकर षड्यन्त्र करते रहते हैं। कोहली जी अपने उपन्यासों में त्याग, प्रेम, समर्पण आदि गुणों को अपनाकर धर्म के मार्ग की ओर अग्रसर करते हैं। कोहली जी सत्य तथा अहिंसा के मार्ग पर चलने का उपदेश देते हैं। युधिष्ठिर के माध्यम से कोहली जी ने अहिंसा को आनृंशसता कहते हुए कहा है कि–

''मैं उसे नीति विरूद्ध समझता हूँ।'' युधिष्ठिर ने कहा, ''उसकी कोई आवश्यकता नहीं है। अनावश्यक हिंसा पाप है। महाराज। हस्तिनापुर के राजकोष को समृद्ध करने के लिए अनेक साधन हो सकते हैं। राजा यदि कृषक को अधिक सुविधा दे, तो कृषक के साथ राज्य भी सम्पन्न होता है। राजा देश में शान्ति और न्याय की स्थापना करे तो उद्योग विकसित होते हैं। राज्य में अच्छे मार्ग हों और उन पर यात्री सुरक्षित यात्रा कर सकें तो व्यापार की वृद्धि होती है महाराज। जिस राज्य में उद्योग तथा व्यापार विकसित होगा, वह राज्य तो स्वयं ही समृद्ध तथा सम्पन्न हो जायेगा।... सैनिक अभियान आरम्भ करना और अन्य न्यायी तथा शत्रुभाव न रखने वाले राजाओं का धन छीन कर ले आना धर्म नहीं, दस्युवृति है तात!'' कोहली जी अनावश्यक हिंसा को क्रूरता कह कर विरोध करते हैं तथा मानवता को प्रेम से रहने का संदेश देते हैं। इनके कृष्णकथात्मक उपन्यासों में सभी आदर्श पात्र धर्म के साथ अहिंसा और शान्ति की स्थापना करते हैं। कोहली जी त्याग तथा समर्पण को भी महत्त्वपूर्ण मानते हैं। पारिवारिक मूल्यों में शान्ति स्थापना के लिए भीष्म अपना सर्वस्व त्याग कर संतुष्ट हो जाते हैं। भीष्म स्वयं कहते भी हैं कि–

''मैंने स्वयं को बचा लिया अमात्य प्रवर! अब मेरे लिए जीवन न यम–फास है, न काम पाश, मेरे मन में नस्त्री की कामना है, न सम्पति की, न अधिकार की। माता मुझे जीवन–मुक्त कर और किन दुखों से बचाना चाहती थी।''

कोहली जी त्याग तथा समर्पण को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। वह मानते हैं कि मानव जीवन का सच्चा सुख त्याग तथा समर्पण में ही होता है। राष्ट्रप्रेम सम्बन्धी मूल्य को कोहली जी अपने साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान देते हैं। इनके उपन्यासों में अनेक आदर्श पात्र त्याग, एकता तथा राष्ट्र प्रेम की भावना से ओत–प्रोत हैं। इनके उपन्यासों में भीष्म के माध्यम से कोहली जी राष्ट्रप्रेम की भावना को उजागर करते हैं। भीष्म राष्ट्रीयता के भाव स्वरूप ही अंत तक राज्य की सुरक्षा का दायित्व निभाते हैं।

मानवतावादी जीवन मूल्य भी मानव जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। कोहली जी ने इन मूल्यों के माध्यम से एक आदर्श समाज की स्थापना करने का प्रयास किया है। जिस मानव में

प्रेम, त्याग, समर्पण, राष्ट्रप्रेम आदि भाव समाहित हैं, वह व्यक्ति कभी भी किसी को अपना शत्रु नहीं समझता तथा उसके मन में कभी भी ईर्ष्या, द्वेष की भावना उत्पन्न नहीं होती। मानवतावादी कर्म सदैव ही धर्म से प्रेरित होता है, उसमें स्वार्थ तथा द्वेष का कहीं कोई स्थान नहीं होता, उनके मन में कभी भी लोभ, ईर्ष्या, द्वेष या स्पर्धा का भाव नहीं जगता। कोहली जी पाण्डवों के माध्यम से मानवतावादी मूल्यों का वर्णन करते हैं। उन्होंने युधिष्ठिर को धर्म व दया की प्रतिमूर्ति माना है, जो बड़े से बड़े अपराधी को क्षमा कर देते हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कोहली जी ने अपने कृष्णकथात्मक उपन्यासों में प्राचीन युग की समस्याओं तथा विसंगतियो की स्थिति को वर्तमान युग के साथ प्रासंगिक किया है। समाज में व्याप्त अन्याय तथा अधर्म को कृष्ण तथा पाण्डवों के माध्यम से समाप्त करके धर्म तथा मूल्यों की पुनः स्थापना का प्रयास किया है। वह मानव जीवन में स्वतन्त्र रूप से जीवन मूल्यों को प्रतिष्ठापित करते हैं। कोहली जी ने कृष्ण तथा पाण्डवों के माध्यम से समाज में धर्म तथा जीवन मूल्यों को पुनः स्थापित किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

क्रमांक	लेखक का नाम	रचना का नाम	प्रकाशन
1.	डॉ0 ओमप्रकाश सारस्वत	बदलते–मूल्य और आधुनिक हिन्दी नाटक	मंथन पब्लिकेशन, रोहतक।
2.	डॉ0 हेमन्त कुमार पानेरी	स्वातन्त्र्योतर हिन्दी उपन्यास : मूल्य संक्रमण	संधी प्रकाशन, जयपुर।
3.	डॉ0 शंकर दयाल शर्मा	हमारे जीवन–मूल्य	प्रवीण प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली।
4.	नरेन्द्र कोहली	कर्म	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
5.	नरेन्द्र कोहली	बन्धन	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
6.	डॉ0 श्याम बहादुर वर्मा, डॉ0 धर्मेन्द्र वर्मा	बृहत् हिन्दी शब्दकोश, खण्ड–2	प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
7.	डॉ0 हरदेव बाहरी	लोकभारती राजभाषा शब्दकोष	लोकभारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गाँधी, मार्ग, इलाहाबाद।
8.	कैलाश चन्द्र भाटिया	अंग्रेजी–हिन्दी प्रशासनिक कोश	प्रभात प्रकाशन, 4/19, आसफ अली रोड़, नई दिल्ली–110002
9.	डॉ0 हुकुमचन्द राजपाल	आधुनिक काव्य में नवीन जीवन–मूल्य	भारतीय संस्कृत भवन, जयपुर